SAMPLE QUESTION PAPER - 1
Hindi A (002)
Class X (2025-26)

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए :

- इस प्रश्नपत्र में कुल 15 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल चार खंड हैं- क, ख, ग, घ।
- खंड-क में कुल 2 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 10 है।
- खंड-ख में कुल 4 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 16 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- खंड-ग में कुल 5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है।
- खंड-घ में कुल 4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए ।

खंड क - अपठित बोध

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -** **[7]**

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन करना उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे, तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल के प्राप्त न होने पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष होता रहता है-यह उसे कदापि न प्राप्त होता ,यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दु:ख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म-ग्लानि के उस कठोर दु:ख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोच कर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित्त में जो तुष्टि होती है। वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

1. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन (A): गीता में कहा गया है कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें।

कारण (R): कर्म करने से जीवन संतोष और आनंद में व्यतीत होता है।

i. कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

ii. कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

iv. कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. "कर्म में आनंद अनुभव" के संबंध में सही कथनों का चयन करें:

I. कर्म करने वाले का जीवन संतोषपूर्ण होता है।

II. प्रयत्न न करने पर आत्म-ग्लानि होती है।

III. फल प्राप्त न होने पर कर्म करना व्यर्थ होता है।

IV. धर्म और उदारता में दिव्य आनंद भरा रहता है।

विकल्प:

i. केवल I, II और IV सही हैं।

ii. केवल II और III सही हैं।

iii. केवल I और III सही हैं।

iv. सभी कथन सही हैं।

3. नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित करें:

कॉलम 1	**कॉलम 2**
I. कर्म में संतोष	1 - जीवन की आशा और उत्साह में वृद्धि
II. प्रयत्न की स्थिति	2 - आत्म-ग्लानि से बचाव
III. धर्म और उदारता	3 - दिव्य आनंद

विकल्प:

i. I (1) II (2) III (3)

ii. I (2) II (1) III (3)

iii. I (3) II (2) III (1)

iv. I (1) II (3) III (2)

4. कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा क्यों नहीं होता? (2)

5. घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** **[7]**

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
हैं बँधे नर के करों में वारि, विद्युत्, भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित्, गिरि, सिंधु एक समान।
प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य;
मानते हैं हुक्म मानव का महा वरुणेश,
और करता शब्दगुण अंबर वहन संदेश।
नव्य नर की मुष्टि में विकराल,
हैं सिमटते जा रहे प्रत्येक क्षण विकराल।
यह प्रगति निस्सीम! नर का यह अपूर्व विकास!
चरण-तल भूगोल! मुट्ठी में निखिल आकाश!
किंतु, है बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष,
शीश पर आदेश कर अवधार्य,
छूट पर पीछे गया है रह हृदय का देश;
मोम-सी कोई मुलायम चीज़
ताप पाकर जो उठे मन में पसीज-पसीज।

1. 'हैं नहीं बाकी कहीं व्यवधान' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? (1)

i. अब मनुष्य के सामने बहुत रूकावट हैं।

ii. अब मनुष्य के सामने कोई रूकावट नहीं है।

iii. अब मनुष्य का ज्ञान बढ़ गया है।

iv. अब मनुष्य ने प्रगति कर ली है

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन (A): आज की दुनिया में मानव ने प्रकृति को पूरी तरह से नियंत्रित कर लिया है।

कारण (R): मानव का विकसीत मस्तिष्क और प्रगति ने उसे प्रकृति के हर तत्त्व पर नियंत्रण प्रदान किया है।

विकल्प:

i. कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

ii. कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

iv. कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. नीचे दिए गए कथनों में से सही विकल्प का चयन करें:

I. मानव की प्रगति ने प्रकृति के तत्वों को नियंत्रित किया है।

II. आधुनिक मानव का विकसीत मस्तिष्क ही उसकी प्रगति का कारण है।

III. मनुष्य ने अपनी शक्ति से प्राकृतिक संसाधनों को सिमटाया और वश में किया है।

IV. मानव का विकास केवल मस्तिष्क तक सीमित है, हृदय पीछे रह गया है।

विकल्प:

i. कथन I, II और III सही हैं।

ii. केवल कथन IV सही है।

iii. कथन I, II और IV सही हैं।

iv. केवल कथन III सही है।

4. मानव द्वारा किए गए वैज्ञानिक प्रगति के अद्भुत विकास कवि को खुशी नहीं दे रहे हैं, क्यों? (2)

5. कवि को आज की दुनिया विचित्र और नवीन क्यों लग रही है? (2)

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. निम्नलिखित में से **किन्हीं चार** का निर्देशानुसार उत्तर लिखिए: **[4]**

i. एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। (सरल वाक्य में बदलिए)

ii. कहा जा चुका है कि मूर्ति संगमरमर की थी। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए)

iii. मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

iv. हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों ही आँखों में हँसा। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

v. साधु-संत कुंभ में शामिल होने के लिए प्रयाग गए जहाँ उन्होंने प्रशासन की व्यवस्था की प्रशंसा की। (सरल वाक्य में बदलिए)

4. **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार वाक्यों का निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए - (1x4=4)** **[4]**

i. चलो, अब खेलते हैं। (भाववाच्य में बदलिए।)

ii. रामपाल ने बड़े दुःखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया। (कर्मवाच्य बनाइए।)

iii. समर्थकों द्वारा पुष्पवर्षा की गई। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)

iv. उसने भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

v. भाववाच्य का एक उदाहरण लिखो।

5. **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए- (1x4=4)** **[4]**

i. <u>जहाँ तक</u> कब्जा हो चुका है।

ii. उसमें से <u>कुछ</u> जमीन हमें लौटा दी जाए।

iii. ताकि <u>हमें</u> लगे।

iv. कि हमारी <u>भावना</u> का सम्मान किया गया।

v. तो घर की व्यवस्था <u>रुक जाएगी</u>।

6. निम्नलिखित काव्यांशों के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए- (किन्हीं चार) **[4]**

i. कुसुम-वैभव में लता समान।

ii. खंजरीर नहीं लखि परत कुछ दिन साँची बात।
बाल द्रगन सम हीन को करन मनो तप जात।।

iii. इस सोते संसार बीच, जग कर सजकर रजनी बाले।

iv. हनुमान की पूंछ में लगन न पायी आगि।
सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भागि।

v. है वसुंधरा बिखेर देती मोती सबके सोने पर।
रवि बटोर लेता है उसको सदा सवेरा होने पर।

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

खेती बारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखा झगड़ा मोले लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शोच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते-जो उनके घर से चार कोस दूरी पर था-एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार में 'भेंट' रूप रख लिया जाकर 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुज़र चलाते!

i. लेखक के अनुसार बालगोबिन भगत साधु क्यों थे?

क) वे सच्चे साधुओं की तरह उत्तम आचार-विचार रखते थे	ख) वे साधु की तरह दिखते थे
ग) वे किसी से लड़ते नहीं थे	घ) वे मोह-माया से दूर थे

ii. बालगोबिन भगत का कौन-सा कार्य-व्यवहार लोगों के आश्चर्य का विषय था?

क) अपना काम स्वयं करना	ख) किसी से झगड़ा न करना
ग) गीत गाते रहना	घ) जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना

iii. बालगोबिन भगत कबीर के ही आदर्शों पर चलते थे, क्योंकि

क) कबीर भगवान का रूप थे	ख) कबीर उनके मित्र थे
ग) कबीर उनके गाँव के मुखिया थे	घ) वे कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे

iv. बालगोबिन भगत के खेत में जो कुछ पैदा होता, उसे वे सर्वप्रथम किसे भेंट कर देते?

क) गरीबों में	ख) कबीरपंथी मठ में
ग) मंदिर में	घ) घर में

v. वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज **साहब** की थी। यहाँ 'साहब' से क्या आशय है?

क) कबीर से	ख) भगवान से
ग) गुरु से	घ) मुखिया से

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

i. **नेताजी का चश्मा** कहानी के आधार पर पानवाले के चरित्र पर प्रकाश डालिए। [2]

ii. **एक कहानी यह भी** पाठ के आधार पर लेखिका के पिताजी के सकारात्मक और नकारात्मक गुणों का उल्लेख कीजिए। [2]

iii. पतनशील सामंती समाज झूठी शान के लिए जीता है - **लखनवी अंदाज़** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2]

iv. संस्कृति सभ्यता को किस प्रकार प्रभावित करती है? [2]

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

i. कवि के अनुसार आज प्रत्येक व्यक्ति क्या करने में लगा हुआ है?

क) दूसरों के साथ खुश होने में
ख) अपने घर जाने में
ग) दूसरे की दुर्बलताओं का मज़ाक बनाने में
घ) स्वयं अपना समय व्यतीत करने में

ii. कवि की जीवनकथा किससे भरी हुई है?

क) प्रसन्नता व हताशा से
ख) निराशा व हताशा से
ग) सुख व निराशा से
घ) प्रसन्नता व निराशा से

iii. **यह गागर रीती** में **गागर** शब्द का सांकेतिक अर्थ है-

क) जीवन रूपी घड़ा
ख) निराशा रूपी घड़ा
ग) ख़ुशी रूपी घड़ा
घ) घड़ा रूपी जीवन

iv. कवि के जीवन के आनंद रूपी रस को किसने खाली किया था?

क) इनमें से कोई नहीं
ख) कवि के मित्रों ने
ग) किसी ने नहीं
घ) स्वयं कवि ने

v. पद्यांश की अंतिम पंक्तियों में कवि की कौन-सी चारित्रिक विशेषता प्रकट होती है?

क) दुखी रहना
ख) प्रसन्न रहना
ग) मित्रों के प्रति विनम्रता
घ) जागरूकता

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** [6]

i. **उत्साह** और **अट नहीं रही है** इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए। [2]

ii. मिट्टी की उर्वरा शक्ति को कैसे बढ़ाया जा सकता है? **फसल** कविता के आधार पर लिखिए। [2]

iii. संगतकार द्वारा अपनी आवाज़ को ऊँचा न उठाने की कोशिश उसकी नाकामयाबी क्यों नहीं है? **संगतकार** कविता के संदर्भ में लिखिए। [2]

iv. सूरदास के **पद** में उद्धव के व्यवहार की तुलना किनसे और क्यों की गई है? [2]

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:** [8]

i. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है? [4]

ii. **मैं क्यों लिखता हूँ?** पाठ के अनुसार कभी-कभी बाहरी दबाव भी भीतरी उन्मेष बन जाते हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए। [4]

iii. **जल-संरक्षण** से आप क्या समझते हैं? हमें जल-संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए, क्यों और किस प्रकार? जीवनमूल्यों की दृष्टि से जल-संरक्षण पर चर्चा कीजिए। [4]

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:** **[6]**

i. **शारीरिक शिक्षा और योग** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

- शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं महत्त्व
- शारीरिक शिक्षा और योग
- प्रभाव और अच्छे परिणाम

ii. **झूठ बोलने की विवशता** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

- कब
- क्यों
- पश्चाताप

iii. **हिन्दी साहित्य की उपेक्षा** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

- हमारी मातृभाषा
- पाठकों का घटता रुझान और कारण
- उपेक्षाभाव दूर करने के उपाय

13. आप विद्यालय के प्रमुख छात्र नलिन हैं। आपके विद्यालय में कैंटीन की समुचित व्यवस्था नहीं है। विद्यालय की प्रधानाचार्या से इस समस्या का समाधान करने की प्रार्थना करते हुए लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

आपके मित्र को कुछ गलत लड़कों के साथ रहने की आदत पड़ गई है। इस कारण वह पान मसाला खाने लगा है। इससे होने वाली हानियों से अवगत कराते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

14. स्वास्थ्य मंत्रालय, दिल्ली के निदेशक को कंप्यूटर टाइपिस्ट के लिए स्ववृत सहित आवेदन-पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

आप रूपाली/मयंक हैं। ई-मेल द्वारा बैंक प्रबंधक को अपनी पास-बुक खोने की सूचना लगभग 80 शब्दों में दीजिए।

15. नगर में आयोजित होने वाली भारत की सांस्कृतिक एकता प्रदर्शनी को देखने के लिए लोगों को आमंत्रित करते हुए 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **[4]**

अथवा

आपके प्रिय अध्यापक का जन्मदिन है। इस शुभ अवसर पर 30-40 शब्दों में एक संदेश तैयार कीजिए।

Solution

खंड क - अपठित बोध

1. 1. iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   2. i. केवल I, II और IV सही हैं।
   3. i. I (1) II (2) III (3)
   4. कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा इसलिए नहीं होता क्योंकि उसके मन में यह संतोष होता कि उसने संबन्धित कार्य के लिए प्रयास किया यदि इच्छा अनुसार फल नहीं मिला तो भी प्रयत्न न करने का पश्चाताप नहीं होता।
   5. सेवा के संतोष के लिए घर के बीमार सदस्य का उदाहरण इसलिए दिया गया है क्यों कि उस सदस्य की सेवा करते हुये जिस आशा,उम्मीद और संतोष की अनुभूति होती है वह अवर्णनीय है साथ ही उसके स्वास्थ्य लाभ की दशा में प्राप्त होने वाला सुख और आनंद अलग ही होता जबकि कर्म न करने की दशा में सिवाय पछतावे के कुछ नहीं मिलता।

2. **1.** (ii) अब मनुष्य के सामने कोई रूकावट नहीं है।
   2. (iii) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   3. (i) कथन I, II और III सही हैं।
   4. मानव द्वारा किए गए वैज्ञानिक प्रगति के अद्भुत विकास कवि को खुशी नहीं दे रहे हैं क्योंकि उसके जीवन मूल्यों में गिरावट आ गई है।
   5. कवि को आज की दुनिया विचित्र और नवीन लग रही है क्योंकि आज मानव ने सभी क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की है।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. एक चश्मे वाले का नाम कैप्टन है।
   ii. आश्रित उपवाक्य - कि मूर्ति संगमरमर की थी; (संज्ञा आश्रित उपवाक्य)
   iii. मूर्ति की आँखों पर छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जो सरकंडे से बना था।
   iv. उसने हालदार साहब का प्रश्न सुना और आँखों ही आँखों में हँसा।
   v. साधु-संतों ने कुंभ में शामिल होकर प्रशासन की व्यवस्था की प्रशंसा की।

4. i. चलो अब खेला जाए।
   ii. रामपाल के द्वारा बड़े दुःखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया गया।
   iii. समर्थकों ने पुष्पवर्षा की।
   iv. उसके द्वारा भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर दिया गया था।
   v. उससे हँसा नहीं जाता। बच्चे से रोया जाता है।

5. i. **जहाँ तक-** स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'हो चुका है' क्रिया का विशेषण।
   ii. **कुछ-** परिमाणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'जमीन' की विशेषता।
   अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य- ' जमीन'|
   iii. **हमें-** पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग / स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्मकारक।
   पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग/ स्त्रीलिंग ,कर्म कारक।
   iv. **भावना** - भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, संबंध कारक।
   v. **रुक जाएगी**- अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, भविष्य काल, कर्तृवाच्य

6. i. उपमा अलंकार
   ii. उत्प्रेक्षा अलंकार
   iii. मानवीकरण अलंकार
   iv. अतिश्योक्ति अलंकार
   v. मानवीकरण अलंकार

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
   खेती बारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे-साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखा झगड़ा मोले लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शोच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते-जो उनके घर से चार कोस दूरी पर था-एक कबीरपंथी मठ से मतलब! वह दरबार में 'भेंट' रूप रख लिया जाकर 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुज़र चलाते!

   (i) **(क)** वे सच्चे साधुओं की तरह उत्तम आचार-विचार रखते थे
   व्याख्या:

वे सच्चे साधुओं की तरह उत्तम आचार-विचार रखते थे

(ii) **(घ)** जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना
व्याख्या:
जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना

(iii) **(क)** कबीर भगवान का रूप थे
व्याख्या:
कबीर भगवान का रूप थे

(iv) **(ख)** कबीरपंथी मठ में
व्याख्या:
कबीरपंथी मठ में

(v) **(क)** कबीर से
व्याख्या:
कबीर से

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) कहानी में दिखाया गया है कि पानवाला एक बातूनी व्यक्ति है। वह अत्यधिक मोटा है। बात करते समय व हँसते समय उसकी तोंद हिलती रहती है। उसकी बातों में व्यंग्य व हँसी के साथ यथार्थ भी रहता है। कहीं-कहीं देशभक्तों के प्रति अनादर भाव की बात भी कह देता है। किंतु इतना कुछ होते हुए भी वह संवेदनशील व्यक्ति है। कैप्टन की मृत्यु का उसे गहरा दुख है। कैप्टन के मरने पर उसकी देशभक्ति का अहसास होता है।

(ii) लेखिका के पिताजी के कभी अच्छे कभी बुरे व्यवहार ने उनके जीवन को बहुत हद तक प्रभावित किया। उनके पिता रंग के कारण उनकी उपेक्षा करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि लेखिका के मन में आत्मविश्वास की कमी हो गई।
जहाँ एक ओर उनके पिताजी में नाकारात्मक गुण थे वहीं कुछ साकारात्मक गुण भी थे जिसका प्रभाव लेखिका के व्यक्तित्व पर पड़ा। आगे चलकर पिता द्वारा राजनैतिक चर्चाओं में बिठाने के कारण उनको प्रोत्साहन मिला।

(iii) इस पाठ के आधार पर यह पूर्णता स्पष्ट होता है कि पतनशील सामंती समाज झूठी शान के लिए जीता है क्योंकि पाठ मे नवाब शान ने खीरा सूंघ कर खिड़की से बाहर फेंक दिया। अन्यथा वे ऐसे नहीं करते क्योंकि ऐसे करके उन्होंने अपने नवाबिपन और अपनी कम सोच का परिचय दिया है ऐसे करके उन्होंने अन्न का अपमान किया है। वास्तविकता से बेखबर, बनावटी जीवन शैली जीने वाले नवाब साहब ने ट्रेन में लेखके की संगति के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया। खानदानी रईस बनने का अभिनय करते हुए खीरा खाने में भी वे नजाकत दिखाते हैं और उसे सूंघने मात्र से पेट भरने की झूठी तुष्टि करते हैं।

(iv) सभ्यता संस्कृति का ही परिणाम होती है। हमारे खान-पान के ढंग, पहनने-ओढ़ने के तरीके, आवागमन के साधन, आपसी मेल-मिलाप, लड़ाई-झगड़े के तौर-तरीके जितने सुसंस्कृत होंगे, हमारी सभ्यता भी उतनी ही अच्छी होगी। जिस देश में खान-पान के ढंग, गमनागमन के साथ, पहने-ओढ़ने के ढंग, जितने उन्नतः होते हैं, वहाँ सभ्यता भी उतनी ही उन्नत होती है।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

(i) **(ग)** दूसरे की दुर्बलताओं का मज़ाक बनाने में
व्याख्या:
दूसरे की दुर्बलताओं का मज़ाक बनाने में

(ii) **(ख)** निराशा व हताशा से
व्याख्या:
निराशा व हताशा से

(iii) **(क)** जीवन रूपी घड़ा
व्याख्या:
जीवन रूपी घड़ा

(iv) **(ख)** कवि के मित्रों ने
व्याख्या:
कवि के मित्रों ने

(v) **(ग)** मित्रों के प्रति विनम्रता
व्याख्या:
मित्रों के प्रति विनम्रता

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) निराला जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं-प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण। 'उत्साह' और 'अट नहीं रही है' दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। काव्य के दोनों पक्ष (भाव पक्ष और शिल्प पक्ष) सराहनीय हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे गेयताछाया, प्रवाहमयता, अलंकार योजना आदि भी देखने को मिलती हैं। भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी दर्शनीय है। भाषा सरल, सहज और प्रवाहमयी है। अतुकांत शैली का भी प्रयोग किया गया है।

(ii) मिट्टी की उर्वरा शक्ति को नदियों के अमृतमयी जल से, सूरज की किरणों से, हवा की थिरकन से और किसानों के परिश्रम-भरे दुलार से बढ़ाया जा सकता है।

(iii) संगतकार द्वारा अपनी आवाज़ को ऊँचा न उठाने की कोशिश उसकी नाकामयाबी नहीं है। इसके बजाय, यह उसके कर्तव्य का निर्वाह और मनुष्यता का परिचायक है। संगतकार जानता है कि मुख्य गायक के साथ संगीत में सहयोग देने का उसका कर्तव्य है, और उसकी आवाज़ को ऊँचा न उठाकर वह गायक की स्थिति और प्रदर्शन को समझते हुए उचित समर्थन प्रदान करता है। यह उसके पेशेवर और संवेदनशील दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो न केवल उसकी विफलता को दूर करता है, बल्कि संगीत की गहरी समझ और समर्पण को भी प्रकट करता है।

(iv) 1. **कमल के पत्ते से:** पहला उन्होंने उद्धव को कमल के उस पत्ते के समान कहा है जो जल के भीतर रहता है लेकिन उस पर पानी की एक बूँद का भी निशान नहीं रहता है।

2. **तेल की गगरी से:** दूसरा उदाहरण उद्धव के व्यवहार की तुलना तेल की उस गागरी से की है जिस पर पानी की एक भी बूँद नहीं ठहरती है।

इस प्रकार उद्धव कृष्ण प्रेम से अधूरे रह गए वह अगर चाहते तो कृष्ण प्रेम को पा कर अपना जीवन सफल कर सकते थे। और गोपियां उधर से कहती हैं कि तुमने कभी प्रेम रुपी नदी में अपना पांव नहीं डूब गया है नहीं तुम्हारी दृष्टि किसी के सौंदर्य से मुग्ध हुई है इसलिए तुम हमें कृष्ण को बुलाने का संदेश दे रहे हो।

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है क्योंकि बच्चों को अपनी उम्र के बच्चों के साथ ही खेलना अच्छा लगता है। वह अपने मित्रों के साथ उन सब खेलों का आनंद लेना चाहता होगा। मित्रों के साथ खेलते समय यदि वह रोता है तो उसके मित्र उसकी हंसी बनाते हैं और उसे अपने साथ नही खिलाते।

(ii) कई बार लेखक का मन कुछ लिखने को नहीं होता है परंतु प्रकाशक और संपादक का आग्रह उसे लेखन के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा आर्थिक विवशता भी लिखने को विवश करती है तब इस तरह से लिखा गया साहित्य भी आंतरिक अनुभूति को जगा देता है। इससे लेखक इन वाहय दबावों के बिना भी लिखने को तत्पर हो जाता है क्योंकि ये वाय दबाव केवल सहायक साधना का ही काम करते हैं, फिर भी लेखन अच्छा लेखन कर जाता है।

(iii) जल संरक्षण से अभिप्राय है- जल के प्रयोग को घटाना एवं सफाई, निर्माण एवं कृषि आदि के लिए अवशिष्ट जल का पुनः चक्रण करना। जल एक ऐसा अमृत है, जिसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती, जीवित रहने के लिए हम पूर्णरूपेण जल पर निर्भर हैं, पर प्रकृति से लगातार छेड़छाड़ विभिन्न समस्याओं को जन्म दे रही है, अंधाधुंध वृक्षों की कटाई व प्राकृतिक संसाधनों के,विनाश से वर्षा भी अनियमित हो रही है। जल के अभाव से भूजल स्तर में कमी आ गई जिसके कारण खेतों की मिट्टी में अपर्याप्त कमी हो गई है। इन्हीं सब दुष्प्रभावों को देखते हुए आजकल जल संरक्षण अभियान, जल रोको अभियान चलाये जा रहे हैं। इस अभियान के अन्तर्गत सार्वजनिक जल स्रोतों या निजी जल स्रोतों के शोधन व जीर्णोद्धार का कार्य शासकीय व व्यक्तिगत सहयोग से कराया जाना आवश्यक है। जल संरक्षण के लिए हमें पानी की बर्बादी रोकनी चाहिए। वर्षा के जल को व्यर्थ बहने से रोकना चाहिए। अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वर्षा के वातावरण को तैयार करना चाहिए।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) **शारीरिक शिक्षा और योग**

शारीरिक शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है, जिसमें शारीरिक गतिविधियों के द्वारा शरीर को स्वस्थ रखने की कला सिखाई जाती है। शारीरिक विकास के साथ-साथ इससे व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास भी होता है। शारीरिक शिक्षा में योग का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य शरीर, मन एवं आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करना होता है। यह मन शांत एवं स्थिर रखता है, तनाव को दूर कर सोचने की क्षमता, आत्मविश्वास एवं एकाग्रता को बढ़ाता है। नियमित रूप से योग करने से शरीर स्वस्थ तो रहता ही है, साथ ही यदि कोई रोग है तो इसके द्वारा उसका उपचार भी किया जा सकता है।

कुछ रोगों में तो दवा से अधिक लाभ योग करने से होता है। तमाम शोधों से यह प्रमाणित हो चुका है कि योग संपूर्ण जीवन की चिकित्सा पद्धति है। पश्चिमी देशों में भी योग के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ रहा है और लोग तेज़ी से इसे अपना रहे हैं। योग की बढ़ती लोकप्रियता एवं महत्त्व का ही प्रमाण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी योग का समर्थन करते हुए 21 जून को योग दिवस घोषित कर दिया है।

वर्तमान परिवेश में योग न सिर्फ हमारे लिए लाभकारी है, बल्कि विश्व के बढ़ते प्रदूषण एवं मानवीय व्यस्तताओं से उपजी समस्याओं के निवारण में इसकी सार्थकता और भी बढ़ गई है। यही कारण है कि धीरे-धीरे ही सही, आज पूरी दुनिया योग की शरण ले रही है।

(ii) कभी-कभी व्यक्ति को न चाहते हुए भी झूठ बोलना पड़ता है। ऐसा ही एक वाकया मेरे दोस्त के साथ हुआ। उसकी माँ बुखार से तप रही थी तथा घर में खाना नहीं बना था। वह पास में स्थित एक दुकान पर गया और उसने वहाँ रखी एक डबल रोटी उठा ली तथा भागते हुए घर पहुँचा। जब माँ ने पूछा डबल रोटी कहाँ से लाया? तो उसने झूठ बोल दिया कि अपने दोस्त के घर से लाया है। तभी दुकानदार घर में आया और उसने उसकी माँ को सारी बात बताई। माँ ने डबल रोटी के पैसे दुकानदार को दे दिए और पप्पू (मेरे मित्र) को ऐसी हरकत दुबारा न करने की कसम दी। पप्पू को इस बात का भारी पछतावा था कि उसने माँ के सामने झूठ बोला जिससे माँ को दुकानदार के समाने नीचा देखना पड़ा।

(iii) **हमारी मातृभाषा -** किसी देश की वह भाषा जिसका प्रयोग उस देश के लगभग सभी राज्यों, क्षेत्रों, नगरों और गाँव के लोगों के द्वारा किया जाता है वह मातृ भाषा कहलाती है। हिन्दी भाषा भारत की मातृ भाषा व राष्ट्र भाषा दोनों पदों पर आसीन है। हिंदी भाषा को भारतीय संविधान में भारत की

आधिकारिक राष्ट्र भाषा का स्थान प्राप्त है।

पाठकों का घटता रुझान और कारण - स्वतंत्रता के पश्चात् इस भाषा के साहित्यिक पक्ष की लोग उपेक्षा कर रहे हैं। वर्तमान समय में भी इसके साहित्य के प्रति लोगों का रुझान घटता जा रहा है। लोग हिन्दी साहित्य को छोड़कर विदेशी साहित्य के मनोरंजन के प्रधान साधन सिनेमा की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। उन्हें कविताओं के स्थान पर फिल्मी गानों की धुनें अधिक याद रहती हैं। इसकी उपेक्षा के मूल कारण हैं - हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार में कमी, दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों में इससे संबंधित कार्यक्रमों का अभाव व विद्यालयों में हिन्दी पर कम ध्यान दिया जाना। यदि यही स्थिति रही तो एक दिन हिन्दी साहित्य अपना अस्तित्व खो देगा।

उपेक्षाभाव दूर करने के उपाय - इसके अस्तित्व को बचाने व लोगों में इसके प्रति रूचि बढ़ाने के लिए इसके प्रचार-प्रसार पर अधिक बल देना होगा। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में इससे सम्बन्धित कार्यक्रमों को स्थान देना होगा। काव्य गोष्ठियों का आयोजन करना होगा। कवि सम्मेलनों का आयोजन करना होगा व इन सबसे ऊपर कवियों का सम्मान करना होगा तभी हिन्दी साहित्य को पुनः अपना स्थान प्राप्त होगा।

13. प्रधानाचार्य जी,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय,
गोविन्द नगर, दिल्ली
दिनांक- 01-04-2023

विषय : विद्यालय में कैंटीन की व्यवस्था करवाने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र।

महोदया जी,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं (बी) का छात्र हूँ। मैं आप से अपने विद्यालय में कैंटीन की व्यवस्था करवाने के लिए आग्रह करना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में कैंटीन की व्यवस्था न होने के कारण हमें बाहर से खाने की चीज़े खरीदनी पड़ती है। उन चीजों के बारे में हमें पता नहीं होता की वह स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त है या नहीं। बाहर से खरीद कर खाने से हमारे स्वास्थ्य को नुकसान हो सकता है। यदि हमारे विद्यालय में कैंटीन की व्यवस्था होगी तो हमारी स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा जाएगा और हमें शुद्ध और स्वच्छ खाना उपलब्ध होगा। अपितु मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरी बात पर जल्दी ही अवश्य विचार करेंगे।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
नलिन
दसवीं (बी)

अथवा

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
02 मार्च, 2019
प्रिय गोविन्द सिंह,
सप्रेम नमस्ते।

स्वयं सकुशल रहकर आशा करता हूँ कि तुम भी छात्रावास में रहते हुए सकुशल होगे। पिछले सप्ताह तुम्हारे कक्षाध्यापक का पत्र आया था, जिसमें उन्होंने तुम्हारे द्वारा पान मसाला खाने संबंधी गंदी आदत की शिकायत की थी। इससे तुम्हारे पिता जी बहुत चिंतित दिख रहे थे।

मित्र, तुम नहीं जानते कि तुमने गंदे लड़कों की संगति करके कितनी बुरी आदत बना ली है। तुम पान मसाला जैसे मादक पदार्थ को तथाकथित सभ्यता का प्रतीक मानने लगे हो, यह कहीं से भी उचित नहीं है। ये पान मसाले खाने में भले अच्छे लगें पर इनमें मीठा ज़हर भरा होता है। तुम्हारा सच्चा मित्र होने के कारण मैं तुम्हें इस मीठे ज़हर के सेवन से रोकना चाहता हूँ। तुम ऐसे मादक पदार्थों का सेवन अविलंब बंद कर दो। अभी भी समय हैं कि तुम सही रास्ते पर आ जाओ वरना इससे पीछा छुड़ाना बहुत कठिन हो जाएगा।

तुम्हारा शुभचिंतक
गौतम

14. प्रति,
निदेशक
स्वास्थ्य मंत्रालय
दिल्ली।

विषय- कंप्यूटर टाइपिस्ट पद के लिए आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 05 फरवरी, 20xx के ‘नवभारत टाइम्स’ समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके विभाग में कंप्यूटर टाइपिस्ट के पद रिक्त हैं। प्रार्थी स्वयं को इस पद के योग्य मानते हुए आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

नाम - पंकज शर्मा
पिता का नाम - श्री राम शर्मा
जन्मतिथि - 15 अप्रैल, 1991
पता - बी 4/126, रामा गार्डन, गोविंद विहार, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2005	74%
बारहवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	79%

बी.सी.ए.	एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा, गौतमबुद्ध नगर	2010	71%
एम.सी.ए.	एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा, गौतमबुद्ध नगर	2012	72%
टंकण प्रशिक्षण	छह माह का पाठ्यक्रम	2013	

अनुभव- चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट दिल्ली में कम्प्यूटर आपरेटर पद पर एक साल (अंशकालिक)।

घोषणा- मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरे ज्ञान से पूर्णतया सत्य हैं। आशा है कि आप मेरी योग्यताओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए आप मुझे सेवा का अवसर प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद

प्रार्थी

पंकज शर्मा

हस्ताक्षर .....

दिनांक 08 मई, 20xx

संलग्न- प्रमाण-पत्रों एवं अनुभव प्रमाण-पत्र की छायांकित प्रति।

अथवा

From: Rupalipatel@gmail.com

To: Kotakbankofindia@gmail.com

विषय- बैंक की पास बुक खोने की सूचना देने हेतु।

मेरा नाम रूपाली पटेल है। मैं नेहरू नगर की निवासी हूँ और आपके बैंक की ग्राहक भी हूँ। मैं एक हफ्ते से पासबुक खोज रही हूँ, लेकिन मिल नहीं रही है। शायद गिर गई हो। आपसे अनुरोध है की मेरी नई पासबुक बनवा दें। मैं सदा आपकी आभारी रहूँगी। बैंक से संबंधित कुछ जानकारी निम्नलिखित है।

खाता संख्या - 25684578XXXX

सधन्यवाद

रूपाली पटेल

15.

खुशखबरी! खुशखबरी! खुशखबरी!

आपके अपने शहर में

भारतीय सांस्कृतिक एकता प्रदर्शनी

(एक भारत : श्रेष्ठ भारत)

भारत के विभिन्न राज्यों, नगरों के हस्त शिल्प, कला, व्यंजन, लोक संगीत, रीति-रिवाज, परिधान एवं जनजीवन का अनूठा संगम। इस प्रदर्शनी में आप सभी आमंत्रित है।

स्थान - दादा देव मेला ग्राउंड, पालम

समय- सायः 4 से रात्री 12 बजे तक

प्रवेश निःशुल्क

अथवा

संदेश

30 जून, 2020

पूज्य अध्यापक

छात्र प्रिय, कर्मठ, छात्रों के प्रेरणास्रोत

नवीन गोविन्दम् विद्यालय, पालम के

हिंदी विषय के अध्यापक

श्री त्रिभुवन शर्मा जी

को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपकी वजह से मेरी रुचि हिंदी भाषा में हो पाई I

मैं आपके मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रवीण

कक्षा 9 वीं ब